**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2019; 5(1): 60-63
www.allresearchjournal.com
Received: 16-11-2018
Accepted: 29-12-2018

**डॉ. रंजीता गोयल**
पूर्व–शोधार्थी, विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ. रंजीता गोयल**
पूर्व–शोधार्थी, विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

# सरकारी विद्यालय एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के समायोजन का अध्ययन

## डॉ. रंजीता गोयल

**सारांश**
वैश्वीकार के इस युग में छात्रों/छात्राओं को अनेक प्रकार के पारिवारिक, सामाजिक संघर्षों का सामना करना पड़ता है, फलस्वरूप विद्यालय, समाज एवं परिवार में समायोजित होने के लिए उनमें मानसिक तनाव उत्पन्न हो जाती है। जिससे उनमें निराशा, अवसाद, सामाजिक अलगाव, विद्यालयों में लगातार असफलता प्राप्त होती है और कुसमायोजन की स्थिति पैदा हो जाती है। परिणामस्वरूप वे हर क्षेत्र में जैसे शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक रुप से पिछड़ने लगते हैं। इन विषम परिस्थितियों में समाधान के लिए समायोजन स्तर को चिन्हित कर विद्यार्थियों के लिए उचित वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए तथा शिक्षकों एवं माता–पिता/अभिभावक द्वारा बच्चों को उचित मार्गदर्शन दिया जाए। जिससे की बच्चों का समूचित विकास हो सके।

**मूल शब्दः–** सरकारी विद्यालय, गैर सरकारी, छात्रा, समायोजन

**प्रस्तावना**
हमारा जीवन चुनौतियों एवं संघर्षों से परिपूर्ण है। बालपन से हमें जीवन की विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जो जिस सीमा तक जितने अच्छे ढंग से जीवन संग्राम की इस लड़ाई को लड़ता जाता है वह उतने ही अच्छे रूप से सफलता से प्रगति करता रहता है। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त जीवन में हम बहुत कुल चाहते हैं और यही चाह हमें पल–पल संघर्ष करने को प्रेरित करती है। परन्तु बहुत बार ऐसा भी होता है। कि जो हम चाहते हैं जिसके लिए हम दिन–रात परिश्रम करते हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति हमें नहीं हो पाती। उदाहरण के लिए एक बालक इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश पाने के लिए तरह–तरह की परीक्षा देता है परन्तु अथक परिश्रम के बाद भी उसे सफलता नहीं मिलती। इस हालत में वह अपने लक्ष्य को ही परिवर्तित कर देता है तथा बी.एससी. में प्रवेष लेकर आगे एम.एससी. तथा प्राध्यापक बनने की बात को पूरा करने के लिए जुट जाता है। एक क्षेत्र में असफलता के बाद दूसरे किसी क्षेत्र का चुनाव करना, अपने लक्ष्य की ऊँचाई को अपनी योग्यता और परिस्थितियों के अनुसार घटा देना, इस प्रकार के संबोधित एवं परिवर्तित व्यवहार को ही समायोजन की संज्ञा दी जाती है।
किशोरावस्था में किशोर में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सांवेगिक तथा सामाजिक विकास स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। इस प्रकार किशोरावस्था शारीरिक परिपक्वता के साथ–साथ मानसिक, सांवेगिक परिपक्वता की भी अवस्था है। इस अवस्था में किशोर का शरीर बालकों से भिन्न प्रौढ़ों के समान हो जाता है। इस संक्रमणकालीन अवधि में किशोर स्वयं को दो अवस्थाओं के मध्य (वयःसंधि) पाता है, अतः वह परिवर्तनशील परिस्थितियों के बीच अपनी भूमिकाओं के निर्वाह में अस्त–व्यस्त या किंकर्तव्यविमूढ सा हो जाता है। इस अवधि में उस पर अपेक्षाकृत अधिक जिम्मेदारियों का बोझ आ जाता है, जबकि बाल्यावस्था में उसने स्वतंत्रता का सर्वाधिक उपयोग किया होता है।
किशोर के बचकाने व्यवहार पर उसे व्यंग्य या कटाक्ष सुनने पड़ते हैं तथा आयु के अनुरूप आचरण करने की स्थिति में सुधार करने की हिदायत दी जाती है, जिससे वह भ्रमित हो जाता है। इस अवस्था में किशोर अपनी स्थिति तथा भूमिका के विषय में अनेक प्रकार की समस्याओं के प्रति समायोजन स्थापित करने का प्रयास करता है। इन समस्याओं का सीधा प्रभाव किशेरों तथा किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। किशोरावस्था की समस्याओं में मुख्यतः स्कूल में समायोजन की समस्या, यौन व्यवहार सम्बन्धी समस्या, नैतिक व्यवहार सम्बन्धी समस्या, व्यावसायिक समायोजन सम्बन्धी समस्या, वित्तीय समस्या, मादक वस्तुओं के सेवन की समस्या, आत्महत्या आदि की समस्याएं सम्मिलित हैं।
प्रायः किशोरों को स्कूल में शिक्षकों एवं साथियों के साथ उचित समायोजन की समस्या का सामना करना पड़ता है। कतिपय अध्यापक अपनी रूढ़िवादी प्रकृति के फलस्वरूप किषोरों को किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता देने से इन्कार कर देते हैं और बालक समझकर उनको कभी–कभी शारीरिक दण्ड भी दे बैठते हैं। स्कूल का पाठ्यक्रम मूलतः सैद्धान्तिक होता है और मुश्किल से छात्रों की उनमें सहभागिता हो पाती है। कक्षा में चुपचाप उन पाठ्यक्रमों पर भाषण सुनना उनमें उबाऊपन उत्पन्न करता है जो उनकी समस्याओं को और भी बढ़ा देता है।

सिंह (2009) के अनुसार किशोर किसी भी सामाजिक कार्यक्रम में स्वतंत्र होकर भाग लेना चाहते हैं जिसकी अनुमति माता–पिता से प्रायः नहीं मिलती। इसका परिणाम यह होता है कि उनमें तथा माता–पिता में तनाव बढ़ता रहता है और पारिवारिक संघर्ष तीव्र हो जाता है।

पारिवारिक संघर्ष के कारण किशोरों को अपने विकासात्मक कार्यों को पूरा करने में माता–पिता से उचित दिशानिर्देश नहीं मिल पाता। इससे उनकी समस्याएं और भी जटिल हो जाती हैं। ऐसा देखा जाता है कि जिन किशोरों को पारिवारिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है, उनका समायोजन स्कूल अधिकारियों, साथियों एवं पास–पड़ोस के लोगों से भी तनावपूर्ण होता है। कभी–कभी पारिवारिक संघर्ष के कारण इनमें अवसाद, सामाजिक विलगाव, स्कूल में लगातार असफलता जैसी जटिल समस्याएं आत्महत्या जैसी प्रवृत्ति को जन्म देती हैं। इस विषम परिस्थिति में समायोजन की सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

1. सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सरकारी विद्यालय की छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सरकारी विद्यालय की छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**अध्ययन की परिकल्पना**

1. सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के समायोजन पर सार्थक अंतर नहीं है।
2. सरकारी विद्यालय की छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं के समायोजन पर सार्थक अंतर नहीं है।
3. सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं के समायोजन में स्तर सार्थक अंतर नहीं है।
4. सरकारी विद्यालय की छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के समायोजन के स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।

**न्यादर्शः** प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत मधुबनी जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों को सम्मलित किया गया है। जिसमें 150 छात्र एवं 150 छात्राएं सम्मिलित हैं।

**उपकरणः** प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन मापने के लिये आर.पी. सिंह एवं ए.के.पी. सिन्हा द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।

**शोध विधिः** प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

**तालिका 1:** सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के समायोजन की तुलना

[N=300]

| क्र. | घटक | सरकारी विद्यालय के छात्र | | गैर सरकारी विद्यालय के छात्र | | क्रांतिक अनुपात | सार्थकता | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | M | SD | M | SD | | 0.05 | 0.01 |
| 1. | संवेगात्मक समायोजन | 4.75 | 2.20 | 5.45 | 2.50 | 2.58 | S | NS |
| 2. | सामाजिक समायोजन | 4.66 | 2.12 | 4.72 | 2.70 | 0.211 | NS | NS |
| 3. | शैक्षिक समायोजन | 5.10 | 2.79 | 5.65 | 3.10 | 1.62 | NS | NS |
| 4. | समग्र समायोजन | 14.51 | 5.22 | 15.82 | 6.57 | 1.91 | NS | NS |
| 5. | df 298 | | | | | | 1.97 | 2.59 |

NS – सार्थक नहीं, S – सार्थक

तालिका क्रमांक 1 में सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के समायोजन की तुलना को दर्शाया गया है। संवेगात्मक समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (4.75) एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (5.45) है। 0.05 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक है। एवं 0.01 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों को संवेगात्मक समायोजन का स्तर समान है।

सामाजिक समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (4.66) एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (4.72) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों का सामाजिक समायोजन का स्तर समान है।

शैक्षिक समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (5.10) एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (5.65) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर छात्रों का शैक्षिक समायोजन का स्तर समान है।

समग्र समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (14.51) एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (15.82) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों का समग्र समायोजन का स्तर समान है।

**तालिका 2:** सरकारी विद्यालय के छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं के समायोजन की तुलना

[N=300]

| क्र. | घटक | सरकारी विद्यालय के छात्र | | गैर सरकारी विद्यालय के छात्र | | क्रांतिक अनुपात | सार्थकता | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | M | SD | M | SD | | 0.05 | 0.01 |
| 1. | संवेगात्मक समायोजन | 4.35 | 2.23 | 4.21 | 22.69 | 0.56 | NS | NS |
| 2. | सामाजिक समायोजन | 4.62 | 3.12 | 5.22 | 2.60 | 1.81 | NS | NS |
| 3. | शैक्षिक समायोजन | 4.25 | 2.35 | 4.55 | 2.80 | 1.07 | NS | NS |
| 4. | समग्र समायोजन | 13.42 | 6.33 | 13.98 | 6.20 | 0.77 | NS | NS |
| 5. | df 298 | | | | | | 1.97 | 2.59 |

तालिका क्रमांक 2 में सरकारी विद्यालय के छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं के समायोजन की तुलना को दर्शाया गया है। संवेगात्मक समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (4.35) एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (421) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्राओं एवं गैर

सरकारी विद्यालय के छात्राओं को संवेगात्मक समायोजन का स्तर समान है।

सामाजिक समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (4.62) एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (5.22) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर टी॰ पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का सामाजिक समायोजन का स्तर समान है।

शैक्षिक समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (4,25) एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (4.55) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का शैक्षिक समायोजन का स्तर समान है।

समग्र समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (13.42) एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (13. 98) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर समान है।

**तालिका 3:** सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं के समायोजन की तुलना

[N=300]

| क्र. | घटक | सरकारी विद्यालय के छात्र | | गैर सरकारी विद्यालय के छात्र | | क्रांतिक अनुपात | सार्थकता | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | M | SD | M | SD | | 0.05 | 0.01 |
| 1. | संवेगात्मक समायोजन | 4.75 | 2.20 | 4.21 | 2.09 | 2.18 | S | NS |
| 2. | सामाजिक समायोजन | 4.66 | 2.12 | 5.22 | 2.60 | 2.05 | NS | NS |
| 3. | शैक्षिक समायोजन | 5.10 | 2.79 | 4.55 | 2.80 | 1.71 | NS | NS |
| 4. | समग्र समायोजन | 14.51 | 5.22 | 13.92 | 6.20 | 0.80 | NS | NS |
| 5. | df 298 | | | | | | 1.97 | 2.59 |

तालिका क्रमांक 3 में सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं के समायोजन की तुलना को दर्शाया गया है। संवेगात्मक समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (4.75) एवं सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (4.21) है। 0.05 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर है। एवं 0.01 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं को संवेगात्मक समायोजन का स्तर समान है।

सामाजिक समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (4.66) एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (5.22) है। 0.05 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर है एवं 0.01 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का सामाजिक समायोजन का स्तर समान है।

शैक्षिक समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (5.10) एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (4.55) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का शैक्षिक समायोजन का स्तर समान है।

समग्र समायोजन पर सरकारी विद्यालय के छात्रों का मध्यमान (14.51) एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (13. 98) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालय के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर समान है।

**तालिका 4:** सरकारी विद्यालय के छात्राएँ एवं गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों के समायोजन की तुलना

[N=300]

| क्र. | घटक | सरकारी विद्यालय के छात्र | | गैर सरकारी विद्यालय के छात्र | | क्रांतिक अनुपात | सार्थकता | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | M | SD | M | SD | | 0.05 | 0.01 |
| 1. | संवेगात्मक समायोजन | 4.35 | 2.23 | 5.45 | 2.50 | 4.00 | NS | NS |
| 2. | सामाजिक समायोजन | 4.62 | 3.12 | 4.72 | 2.70 | 0.28 | NS | NS |
| 3. | शैक्षिक समायोजन | 4.25 | 2.35 | 5.65 | 3.10 | 4.41 | NS | NS |
| 4. | समग्र समायोजन | 13.42 | 6.33 | 15.82 | 6.57 | 3.22 | NS | NS |
| 5. | df 298 | | | | | | 1.97 | 2.59 |

तालिका क्रमांक 4 में सरकारी विद्यालयों के छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों के समायोजन की तुलना को दर्शाया गया है। संवेगात्मक समायोजन पर सरकारी विद्यालयों के छात्राओं का मध्यमान (4.35) एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान (4,45) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर है। अतः सरकारी विद्यालयों के छात्राओं का संवेगात्मक समायोजन का स्तर सरकारी विद्यालयों के छात्रों से उच्च है।

सामाजिक समायोजन पर सरकारी विद्यालयों के छात्राओं का मध्यमान (4.62) एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान (4.72) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी विद्यालयों के छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों का सामाजिक समायोजन का स्तर समान है।

शैक्षिक समायोजन पर सरकारी विद्यालयों के छात्राओं का मध्यमान (4.25) एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान (5.65) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' मूल्य पर सार्थक अंतर है। अतः सरकारी विद्यालयों के छात्राओं का शैक्षिक समायोजन का स्तर गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों से उच्च है।

समग्र समायोजन पर सरकारी विद्यालयों के छात्राओं का मध्यमान (13.42) एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान (15. 82) है। 0.05 एवं 0.01 स्तर पर 'टी' पर सार्थक अंतर है। अतः छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों से उच्च है।

## निष्कर्ष

सरकारी विद्यालयों के छात्रों एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों का समग्र समायोजन का स्तर समान है। सरकारी विद्यालयों के छात्राओं एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर समान है। सरकारी विद्यालयों के छात्रों एवं सरकारी विद्यालयों के छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर समान है। सरकारी विद्यालयों के छात्राओं का समग्र समायोजन का स्तर गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों से उच्च है।

**संदर्भ**


1. गैरेट, एच.ई. (1981). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड संस बाम्बे.।
2. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2007). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, पीएच.डी. इलाहाबाद.
3. सिंह, अरूण कुमार (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पीएच.डी. पटना.
4. हरलाक, ई.वी. (1979). डेवलपमेन्टल साइकोलाजी, टी.एम. एवं पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
5. आई.ए., गेटस एवं जरसील (1958). शिक्षा मनोविज्ञान, न्यूयार्क.
6. कपिल, एच.के. (2009). सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
7. पाठक, पी.डी. (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
8. मंगल, एस.के. (2010). शिक्षा मनोविज्ञान पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.
9. भटनागर, सुरेश (2010). शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
10. काशीनाथ, एच.एम. (2003). एड्जस्टमेंट कम्पोनेंट ऑफ स्टूडेंट्स स्टडींग इन जवाहर नवोदय विद्यालय, ए कलस्टर एनालिसिस, जनरल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च 20(3), पृ. 295–304.